नईदुनिया

संपादकीय

हिंसा की 77 फीसदी घटनाएं अकेले मणिपुर में

जातीय हिंसा से त्रस्त घायल मणिपुर को समाधान का इंतजार है। मणिपुर जलता रहा और हल ढूंढने में न तो केंद्र ने और न ही राज्य की सरकार ने कभी राजनीतिक इच्छाशक्ति का इजहार किया। वहां हालात बेहद खराब रहे हैं। गृह मंत्रालय की ताजा रपट से यह स्पष्ट है। वर्ष 2023 में समूचे पूर्वोत्तर क्षेत्र में हुई हिंसा में से 77 फीसद घटनाएं मणिपुर में हुईं। वहां बहुसंख्यक मैतेई और आदिवासी कुकी समुदायों के बीच जातीय हिंसा में सैकड़ों नागरिकों और सुरक्षाकर्मियों की जान गई।

महिलाओं पर अत्याचार के जिस तरह के वीडियो आए, वे किसी भी सभ्य समाज के मुंह पर तमाचा थे। वहां तीन मई, 2023 को मैतेई और कुकी समुदायों के बीच बड़े पैमाने पर जातीय हिंसा भड़क उठी। हिंसा का दौर अभी भी जारी है। जबकि सरकार का दावा है कि बीते कुछ महीनों से स्थिति नियंत्रण में है। मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने अब जाकर राज्य में हुए जातीय संघर्ष के लिए माफी मांगी है और सभी समुदायों से पिछली गलतियों को भूलने तथा एक साथ रहने की अपील की है। प्रदेश में हुए जातीय संघर्ष में 250 से अधिक लोगों की जान चली गई है और हजारों लोग बेघर हो गए हैं। यह याद रखा जाएगा कि जब मणिपुर में हिंसा की कई घटनाएं राष्ट्रीय सुर्खियां बनीं, तब बीरेन सिंह या केंद्र की सरकार के स्तर पर चुप्पी रही। विपक्षी कांग्रेस तो अब तक यह सवाल पूछ रही है कि प्रधानमंत्री मणिपुर को लेकर चुप क्यों हैं? वे दुनिया भर की यात्रा कर रहे हैं, लेकिन मणिपुर जाने से परहेज क्यों करते हैं। दरअसल, वहां की स्थिति से निपटने में अक्षमता के बावजूद मुख्यमंत्री बीरेन सिंह सत्ता में बने रहे, उनकी पार्टी उनके साथ हठपूर्वक खड़ी रही।

इस मामले में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि धूमिल हुई। अब जबकि, वहां का समाज बुरी तरह से बंट गया और समरसता दूर की कौड़ी हो गई है, बीरेन की मुश्किलें बढ़ गई हैं। केंद्र सरकार ने वहां के लोगों को भरोसे में लिए बगैर दो फैसले लिए, जो विवादित रहे, भारत-म्यांमार सीमा पर बाड़ लगाना और मुक्त आवागमन व्यवस्था खत्म करना। इन फैसलों का मणिपुर में कई आदिवासी संगठनों ने विरोध किया। सर्वोच्च न्यायालय ने वहां की स्थिति पर स्वत: संज्ञान लेते हुए निगरानी और जांच समितियां गठित कर दी थीं। उसमें बाहरी राज्यों के पुलिस अधिकारियों को तैनात किया गया। उम्मीद बनी थी कि हिंसा की हकीकत जल्द ही सामने आएगी। मणिपुर कोई इतना बड़ा और जटिल राज्य नहीं है कि वहां की स्थितियों से निपटना मुश्किल हो। विवाद भी एक भ्रम की वजह से पैदा हुआ था। अगर सरकार संजीदा होती, तो दोनों समुदाय के लोगों को आमने-सामने बिठा कर मसले का हल निकाल चुकी होती। कोई भी कल्याणकारी सरकार इस तरह पैदा हो गई गृहयुद्ध जैसी स्थिति को हाथ पर हाथ धरे कैसे देख सकती है? शांति बहाली के लिए सभी पक्षकारों का आम सहमति पर आना जरूरी है। वहां जिस तरह से विवाद में जंगल और जमीन का मुद्दा, अवैध प्रवासियों की समस्या, नशीले पदार्थों की तस्करी का जाल और दूसरे कानूनी पहलू उभरते चले गए हैं, उससे स्पष्ट है कि गतिरोध कई मोर्चे पर है और इन सभी पर काम किए जाने की जरूरत है। भावनात्मक बातों से काम नहीं चलेगा। संवेदनशीलता के साथ गंभीर कदम उठाने की जरूरत है।

सामाजिक सौहार्द्र के लिए गौवध निषिद्ध होना ही चाहिए

प्रोफेसर जसीम मोहम्मद

हमारा इतिहास बताता है कि हिंदू और मुसलमान सदियों से शांतिपूर्वक साथ रहते आए हैं। मुगल काल में अकबर और जहाँगीर जैसे शासकों ने हिंदू प्रजा की मान्यताओं का सम्मान करने के लिए गौ-हत्या से परहेज किया। इन भावनाओं का सम्मान करने के उनके फैसले ने साम्राज्य में शांति और एकता बनाए रखने में मदद की। अगर वे सैकड़ों साल पहले इस स्तर की समझदारी और उदारता दिखा सकते थे, तो हम आज की आधुनिक दुनिया में भी ऐसा क्यों नहीं कर सकते हैं।

हमारा देश भारत अनेकता में एकता का सम्मान करने वाला विविधताओं से भरा है, जहाँ कई धर्मों और संस्कृतियों के लोग मिलजुल कर रहते करते हैं। यहाँ की आबादी में हिंदू लगभग 80त्न, जबकि मुस्लिम लगभग 15 प्रतिशत हैं। ऐसे में जहाँ ज़्यादातर लोग गाय को पवित्र पशु के रूप में मानते हैं और उसे आस्था की नजरों से देखते हैं, उनकी भावनाओं का सम्मान करना हम सभी की ज़िम्मेदारी है। दूसरों की मान्यताओं का सम्मान करना, सद्भाव से रहना और ऐसे किसी भी काम से बचना, जो दूसरों की भावनाओं को चोट पहुँचा सकता है या समाज में समस्याएँ पैदा कर सकता है। इस्लाम में, हमारा धर्म हमें दूसरों के साथ शांति से रहना और उनकी परंपराओं और मान्यताओं का सम्मान करना सिखाता है। कुरान हमें ऐसे काम करने से बचने के लिए कहता है, जो दूसरों की भावनाओं को चोट पहुँचा सकते हैं, खासकर अगर इससे बहस या हिंसा हो। जब हम समझते हैं कि भारत में अधिकतर लोग गाय को पवित्र मानते हैं तो सच्चे मुसलमान के तौर पर यह हमारा कर्तव्य है कि हम यह सुनिश्चित करें कि हम बहुसंख्यक समाज की भावनाओं को ठेस न पहुंचाएं। यह प्यार और दोस्ती को सम्मान देकर सौहार्द और आपसी प्रेम को बढ़ाने वाले तरीके से जीने के बारे में है।

भारत में सामाजिक तनाव और हिंसा का बड़ा कारण गौ-हत्या रहा है। हाल के वर्षों में, भीड़ द्वारा हमले और लिंचिंग की घटनाएँ हुई हैं, जहाँ गौ-हत्या या गौमांस खाने के आरोप में कई लोगों को पीटा गया या यहाँ तक कि मार दिया गया। इनमें से कई हमले ग़लत-फ़हमी या अफ़वाहों के कारण हुए। ऐसी घटनाएँ समुदायों के बीच विभाजन पैदा करती हैं, जिससे लोगों का एक-दूसरे पर भरोसा करना मुश्किल हो जाता है। भारत में गौ-हत्या का इतना बड़ा मुद्दे बनने का एक कारण यह है कि गाय हिंदू संस्कृति के साथ बहुत गहराई से जुड़ी हुई है। गाय को गौ माता कहा जाता है, जिसका अर्थ है- गाय माता। हिंदुओं का मानना है कि गाय दयालुता, देखभाल और नि:स्वार्थ भाव से देने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि यह मनुष्यों को दूध प्रदान करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में गाय को परिवार का सदस्य माना जाता है।

भारत दुनिया का बड़ा दूध उत्पादक है, जो वैश्विक डेयरी उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान देता है। लाखों किसान, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, अपनी आय के लिए गायों पर निर्भर हैं। भारतीय डेयरी उद्योग देश की कृषि की आधारशिला है, जिसका दूध उत्पादन वित्त वर्ष 2023 में लगभग 230 मिलियन मीट्रिक टन तक पहुँच गया। यह पिछले वर्षों की तुलना में लगातार वृद्धि दर्शाता है, जो इस क्षेत्र के विकास और महत्व को रेखांकित करता है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक है, जहाँ प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 459 ग्राम प्रतिदिन है। इसलिए, जब गायों का वध किया जाता है तो यह इस व्यवस्था को बाधित करता है और गाँवों की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। गायों की रक्षा करना किसानों की आजीविका का समर्थन करना और देश की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने से भी गहरे तक जुड़ा है। इस्लाम में, जानवरों की बलि देना धार्मिक प्रथाओं का हिस्सा है, खासकर ईद-उल-अज़हा के दौरान। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इस्लाम में विशेष रूप से गायों की बलि की आवश्यकता नहीं है। अन्य जानवर जैसे बकरी, भेड़ या भैंस की भी बलि दी जा सकती है। भारत जैसे देश में जहाँ गौ-हत्या तनाव पैदा करती है, विकल्प चुनना दूसरों को चोट पहुँचाने से बचने का एक सरल तरीका है और अपने धार्मिक कर्तव्यों को भी पूरा करना है।

2017 में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने अवैध बूचड़खानों पर कार्रवाई शुरू की। यह कदम उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में विशेष रूप से प्रमुख था और इसका उद्देश्य मौजूदा कानूनों को लागू करना और मांस उद्योग को विनियमित करना था। इस पहल के तहत कई अपंजीकृत और अनियमित बूचड़खानों को बंद कर दिया गया। 2016 से 2020 तक गौ-हत्या या गौमांस खाने के आरोपों में भीड़ की हिंसा और लिंचिंग की घटनाओं में 50 से अधिक लोगों की जान चली गई। ये दुखद घटनाएँ अक्सर ग़लत-फ़हमी, झूठी अफ़वाहों या सोशल मीडिया पर गलत सूचना के कारण होती है। इस तरह की हिंसा ने समुदायों के बीच विभाजन पैदा किया है और भारत में शांति और एकता बनाए रखने के लिए इन मुद्दों को संबोधित करने के महत्व को रेखांकित किया है। धार्मिक भावनाओं का सम्मान करके और हिंसा को बढ़ावा देने वाली गलत सूचनाओं के प्रसार को रोक कर सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा दिया जा सकता है।

हमारा इतिहास बताता है कि हिंदू और मुसलमान सदियों से शांतिपूर्वक साथ रहते आए हैं। मुगल काल में अकबर और जहाँगीर जैसे शासकों ने हिंदू प्रजा की मान्यताओं का सम्मान करने के लिए गौ-हत्या से परहेज किया। इन भावनाओं का सम्मान करने के उनके फैसले ने साम्राज्य में शांति और एकता बनाए रखने में मदद की। अगर वे सैकड़ों साल पहले इस स्तर की समझदारी और उदारता दिखा सकते थे, तो हम आज की आधुनिक दुनिया में भी ऐसा क्यों नहीं कर सकते हैं। गौहत्या से जुड़ी हिंसा अक्सर समझ और संवाद की कमी के कारण होती है। बहुत से लोग यह नहीं समझते कि बहुसंख्यकों की मान्यताओं का सम्मान करने का मतलब अपनी मान्यताओं को छोड़ना नहीं है। इसका मतलब बस एक संतुलन बनाना है, जो सुनिश्चित करता है कि हर कोई शांति से रह सके। गौ-हत्या से बचना सम्मान दिखाने और अनावश्यक संघर्षों को रोकने का तरीका है। हाल के वर्षों में सोशल मीडिया ने गौ-हत्या के बारे में गलत जानकारी फैलाने में बड़ी भूमिका निभाई है। गायों को नुकसान पहुँचाने का दावा करने वाले वीडियो और संदेश अक्सर वायरल हो जाते हैं, भले ही वे दावे सच न हों। इससे लोगों में गुस्सा पैदा होता है, जिससे भीड़ की हिंसा की घटनाएं सामने आती हैं। हर किसी के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे जानकारी को शेयर करने से पहले उसे सत्यापित करें और ऐसी अफ़वाहें फैलाने से बचें जो परेशानी पैदा कर सकती हैं। मुसलमान होने के नाते हमारे पास अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने की शक्ति है। गायों का वध न करने का निर्णय लेकर और खुले तौर पर शांति और सम्मान को बढ़ावा देकर हम दिखा सकते हैं कि हम बहुसंख्यक समुदाय की भावनाओं को महत्व देते हैं। यह छोटा-सा कदम विश्वास बनाने और हिंदुओं और मुसलमानों के बीच अक्सर मौजूद अविश्वास को कम करने में लंबा रास्ता तय कर सकता है। इस मुद्दे को हल करने में शिक्षा महत्वपूर्ण कारक है। स्कूलों और कॉलेजों में बच्चों को दूसरों की मान्यताओं का सम्मान करने और शांति से एक साथ रहने के महत्व के बारे में सिखाया जाना चाहिए। जब युवा लोग हिंदुओं के लिए गायों के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व के बारे में जानेंगे तो वे यह समझने में बेहतर ढंग से सक्षम होंगे कि गौहत्या से बचना क्यों महत्वपूर्ण है। धार्मिक नेता भी सद्भाव को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे अपने प्रभाव का उपयोग अपने समुदायों को दूसरों की भावनाओं का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कर सकते हैं। शांति और समझ का संदेश देकर वे तनाव कम करने और हिंसा रोकने में मदद कर सकते हैं। इस मुद्दे को संभालने में सरकार की बड़ी जिम्मेदारी है। बूचड़खानों में नियमों और विनियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए सख्त कानून बनाए जाने चाहिए। साथ ही, सरकार को सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी समुदाय लक्षित या भेदभाव महसूस न करे। एक निष्पक्ष और पारदर्शी प्रणाली लोगों के बीच विश्वास बनाने में मदद करेगी। मीडिया आउटलेट्स को भी जिम्मेदारी से रिपोर्ट करना चाहिए। गौ-हत्या या भीड़ की हिंसा से जुड़ी घटनाओं को सनसनीखेज बनाने से बचना चाहिए। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के उदाहरणों को उजागर करने से दूसरों को भी उसी रास्ते पर चलने की प्रेरणा मिल सकती है।

प्रयागराज के महाकुंभ नगर में सुविधाओं का संगम

मुकुंद

प्रयागराज में 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा से महाकुंभ की शुरुआत हो रही है। 14 जनवरी को मकर संक्रांति का दूसरा स्नान है। इसे शाही स्नान और अमृत स्नान भी कहते हैं। संगम के मेला क्षेत्र में महाकुंभ नगर सज-धजकर तैयार है। दुनियाभर से पहुंचने वाले लाखों-करोड़ों तीर्थयात्रियों को संचार संपर्क में असुविधा न हो, इसके लिए केंद्रीय दूरसंचार विभाग (डीओटी) ने व्यापक इंतजाम किए हैं। डीओटी ने संपूर्ण मेला क्षेत्र, प्रयागराज शहर और उत्तर प्रदेश के प्रमुख सार्वजनिक स्थानों में दूरसंचार के बुनियादी ढांचे को अपग्रेड किया है। भारत सरकार के पत्र एवं सूचना कार्यालय (पीआईबी) की वेबसाइट में उपलब्ध ब्यौरे के अनुसार, प्रयागराज शहरी क्षेत्र में 126 किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाया गया है। इसके अलावा 328 नए टावर स्थापित किए गए हैं। मजबूत और निर्बाध कनेक्टिविटी के लिए 1,462 मौजूदा बीटीएस इकाइयों का उन्नयन किया गया है। इसके अलावा 575 नए बेस ट्रांसीवर स्टेशन बनाए गए हैं।

यही नहीं अकेले मेला क्षेत्र में हाईस्पीड विश्वसनीय नेटवर्क कवरेज प्रदान करने के लिए 192 किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाई गई है। 78 सीओडब्ल्यू (ट्रांसपोर्टेबल टावर) से मेला क्षेत्र को कवर किया गया है। यह सुनिश्चित किया गया है कि रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन और हवाई अड्डों में दूरसंचार सेवा हर हाल में पूरी क्षमता से काम करे। प्रयागराज जनपद के सभी महत्वपूर्ण मार्गों पर भी ऐसी ही व्यवस्था की गई है। मेला क्षेत्र में 53 हेल्प डेस्क स्थापित किए गए हैं। यह डेस्क संदिग्ध धोखाधड़ी, खोए या चोरी हुए मोबाइल फोन को ब्लॉक करने जैसी सेवा प्रदान करेंगे। मेला अवधि के दौरान आपातकालीन अलर्ट, आपदा चेतावनी और सामान्य सार्वजनिक जागरुकता संदेश भेजने के लिए सेल ब्रॉडकास्ट अलर्ट सुविधा और कॉमन अलर्टिंग प्रोटोकॉल (सीएपी) एकीकृत प्लेटफार्म की व्यवस्था की गई है।

चारों दूरसंचार सेवा प्रदाता यानी एयरटेल, बीएसएनएल, जियो और वीआई संचालित तीन आपदा प्रबंधन केंद्र भी बनाए गए हैं। मेला क्षेत्र में स्थापित इन केंद्रों को प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदा की स्थिति में महत्वपूर्ण संचार चैनल प्रदान करने के लिए नवीनतम तकनीक से लैस किया गया है।

महाकुंभ ऐसी महत्वपूर्ण तीर्थयात्रा है जो दुनियाभर से करोड़ों लोगों को प्रयागराज की ओर आकर्षित करती है। यह आयोजन हर 12 साल में होता है। वर्ष 2025 का महाकुंभ मेला इतिहास के सबसे बड़े समारोहों में से एक होने की उम्मीद है। इसकी सफलता के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने भी अभूतपूर्व काम किया है। योगी सरकार ने महज चार माह में बेहतरीन सुविधाओं वाला दिव्य और भव्य शहर (महाकुंभ नगर) बसा दिया है। सड़कों का जाल बिछाया गया है। इनकी कुल लंबाई 300 किलोमीटर है। एक किलोमीटर लंबाई के 30 फ्लोटिंग पुल भी बांधे गए हैं। पेयजल और सीवेज जैसी सुविधाएं जुटाई गई हैं। समृद्ध तीर्थयात्रियों के लिए फाइव स्टार डोम और जरूरतमंदों के लिए डॉरमेटरी की सुविधा का ख्याल रखा गया है। महाकुंभ नगर में आंखों का अस्पताल भी होगा। मेला प्रशासन का कहना है कि यह दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा अस्थायी अस्पताल होगा। यहां 45 दिन में पांच लाख मोतियाबिंद के ऑपरेशन करने का लक्ष्य तय किया गया है। प्रयाग हिंदुओं के लिए सदियों से महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। परंपरागत तौर पर नदियों का मिलन बेहद पवित्र माना जाता है, लेकिन संगम पर यह मिलन बेहद अहम माना गया है। यहां गंगा, यमुना और सरस्वती का अद्भुत मिलन होता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान विष्णु अमृत से भरा कुंभ (बर्तन) लेकर जा रहे थे।

असुरों से छीना-झपटी में अमृत की चार बूंदें छलक कर गिर गईं। यह बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन रूपी तीर्थस्थानों में गिरीं। तीर्थ वह स्थान होते हैं जहां भक्तों को इस नश्वर संसार से मोक्ष की प्राप्ति होती है। ऐसे में जहां-जहां अमृत की बूंदें गिरीं वहां तीन-तीन साल के अंतराल पर बारी-बारी से कुंभ मेले का आयोजन होता है। इन तीर्थों में भी संगम को तीर्थराज के नाम से जाना जाता है। संगम में हर 12 साल पर महाकुंभ का आयोजन होता है। प्रयागराज में संगम वह स्थान है जहां गंगा का मटमैला पानी यमुना के हरे पानी में मिलता है। यहीं मिलती है अदृश्य मानी जाने वाली सरस्वती नदी। वैसे तो यह अदृश्य नदी है पर माना जाता है कि वह भू-गर्भ में बहती है । संगम को अकबर के किले के परकोटे से भी देखा जा सकता है। पवित्र संगम पर दूर-दूर तक पानी और गीली मिट्टी के तट फैले हैं। धर्मपरायण हिंदू के लिए संगम में एक डुबकी जीवन को पवित्र करने वाली मानी जाती है। कुंभ और महाकुंभ पर संगम जीवंत हो उठता है।

आजकल

नए साल में चुनौतियां बेशुमार

यूं तो नया या पुराना साल एक समय चक्र मात्र है और देश के सामने समस्याएं व चुनौतियां हर दौर में रही हैं। लेकिन हम समय की एक इकाई में अपनी समस्याओं को दूर करने के लक्ष्य निर्धारित कर निराकरण का प्रयास करते हैं। कमोबेश वर्ष 2025 को लेकर भी यही स्थिति रहने वाली हैं। हालांकि महंगाई, बेरोजगारी तथा गरीबी सर्वकालिक व सर्वदेशीय समस्याएं रही हैं, फर्क है तो यही कि सत्ताधीश इन चुनौतियों का मुकाबला कैसे करते हैं। जैसे-जैसे बीता साल पूर्णता की ओर बढ़ रहा था, देश को लेकर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में कुछ सकारात्मक तो कुछ चिंता बढ़ाने वाली खबरें वातावरण में तैर रही थीं। हालांकि, बांग्लादेश का राजनीतिक घटनाक्रम व अल्पसंख्यकों पर ज्यादती की खबरें विचलित करने वाली थी। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बांग्लादेश में जिस सत्ताधीश के विरोध में सत्ता पलट हुआ, उस सत्ता की सूत्रधार को भारत ने शरण दी।

दरअसल, भारतीय उपमहाद्वीप के देशों में तार्किक के बजाय भावनात्मक मुद्दे राजनीतिक विमर्श पर हावी रहे हैं। हालांकि, अच्छी बात यह है कि दशकों से जारी एलएसी विवाद सिमटता नजर आया। जिससे चीन से बिगड़े रिश्ते पटरी पर आने की उम्मीद जगी। जिसके मूल में अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम भी है, लेकिन सुखद है कि एशिया की बड़ी महाशक्ति से संबंधों में सुधार आया। बाकी इस माह डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिका के राष्ट्रपति का पदभार संभालने के बाद भारत की विदेश नीति दशा-दिशा तय करती नजर आएगी। जहां तक देश के घरेलू मोर्चे का सवाल है तो आर्थिक सुस्ती सत्ताधीशों की चिंताओं का विषय होनी चाहिए।

वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही में आर्थिक विकास दर 5.4 फीसदी रहना चिंता का सबब बनी, क्योंकि यह विकास दर पिछली सात तिमाहियों के सबसे निचले स्तर पर है। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बीता वर्ष आम चुनावों व कई बड़े राज्यों में चुनाव का साल था, जिसमें भारी मात्रा में अनुत्पादक सरकारी खर्च हुआ है। जो कहीं न कहीं देश की विकास दर को प्रभावित करता है। बहरहाल, इसके बावजूद केंद्र सरकार विकास दर व मंदी की आहट को लेकर चिंतित नजर नहीं आती तो उसकी वजह है कि भारत की यह विकास दर भी दुनिया की तमाम बड़ी अर्थव्यवस्थाओं से अधिक है।

महाकुंभः प्रयागराज बनाएं सबके बिगड़े काज

योगेश कुमार सोनी

प्रयागराज में महाकुंभ मेले की शुरुआत 13 जनवरी को पौष पूर्णिमा के दिन होगी। मान्यता है कि महाकुंभ के दौरान संगम स्नान करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है। श्रद्धालुओं के संकल्प पूरे होते हैं। महाकुंभ मेले का समापन 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के दिन होगा। प्रयागराज में हर 12 साल के अंतराल पर महाकुंभ का आयोजन होता है। इससे पहले 2013 में यह शुभ अवसर आया था। महाकुंभ मेले का इंतजार पूरी दुनिया में रह रहे सनातनी हिंदुओं को रहता है। महाकुंभ का आगाज होते ही देश में हलचल मच जाती है। लाखों पग प्रयाग की तरफ बढ़ने लगते हैं। करोड़ों सनातनी अपनी आस्था को लेकर यहां डुबकी लगाने पहुंचते हैं। कुंभ को सनातन धर्म का प्रतीक माना जाता है। यहां लोग पापों के क्षय और पुण्य कमाने की लालसा लेकर जाते हैं। संपूर्ण मेला क्षेत्र में धर्माचार्यों के शिविरों में धर्म की त्रिवेणी कल-कल बहती है।

बीते कुछ वर्षों में हिंदू अपने धर्म के प्रति बहुत जागरूक हुआ है। वैसे तो अब सभी हिन्दू तीर्थस्थलों बहुत भीड़ होती है। इस बार के महाकुंभ में करीब 40 करोड़ श्रद्धालुओं के प्रयागराज पहुंचने का अनुमान लगाया गया है। पिछले महाकुंभ में लगभग 25 करोड़ और उससे पहले 15 करोड़ श्रद्धालु पहुंचे थे। आजादी के बाद पहले महाकुंभ में करीब डेढ़ करोड़ श्रद्धालु पहुंचे थे। 12 वर्ष के अंतराल को धर्मपरायण श्रद्धालु एक युग की तरह मानते हैं। और गंगा-यमुना-सरस्वती के संगम में स्नान करने के साथ सत्संग और दान भी करते है। मान्यता है कि इससे उनके पाप खत्म हो जाते हैं और दोबारा से तरोताजा होकर संसार की यात्रा में लग जाते हैं।

कुंभ की उत्पत्ति समुद्र मंथन की पौराणिक कथा से जुड़ी हुई है।

कहते हैं कि देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया। इससे अमृत निकला। इसके पान के लिए दोनों पक्षों में 12 दिन युद्ध हुआ। यह 12 दिन पृथ्वी पर 12 वर्ष के बराबर थे। इसलिए महाकुंभ का मेला 12 साल में लगता है। संतों का कहना है कि कुंभ के बारे में सुनकर वहां बहुत सारे लोग आते हैं लेकिन वह पूरा लाभ नहीं उठा पाते। कुंभ धार्मिक पर्व है। घूमने-फिरने की जगह नहीं। इसलिए अगर महाकुंभ का पुण्य कमाना है तो धार्मिक आस्था के प्रयागराज पहुंचे और सात्विकता के नियमों का पालन करें। कुंभ मेला क्षेत्र में जो कुछ भी हो, उससे संतुष्ट हों। एक संन्यासी के आध्यात्मिक जीवन की तरह जीयें। प्रयागराज के महाकुंभ की तैयारियों की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी पल-पल की जानकारी लेते हैं।

प्रयागराज सनातन संस्कृति के प्राचीनतम नगरों में से एक है। प्रयाग की महत्ता और प्राचीनता का विवरण ऋग्वेद से लेकर पुराणों और रामायण- महाभारत जैसे महाकाव्यों में मिलता है। सनातन के आराध्य प्रभु श्रीराम के जीवन और वनवास प्रसंग से भी प्रयाग का विशेष संबंध है। रामचरित मानस में वर्णन मिलता है कि वनवास के लिए अयोध्या से निकल कर प्रभु श्रीराम प्रयागराज के श्रृंगवेरपुर धाम पहुंचे। यहां उन्होंने रात काटकर निषादराज की मदद से गंगा पार की। यहां से भारद्वाज मुनि के आश्रम पहुंचे। 142 साल में महाकुंभ के आयोजन के स्वरूप में निरंतर बदलाव देखा जा रहा है। कहते हैं कि 1882 में महाकुंभ के आयोजन में मात्र बीस हजार रुपये की लागत आई थी। इस साल के महाकुंभ मेला क्षेत्र का बजट करीब 7500 करोड़ रुपये है। प्रयागराज व्यापार मंडल के अनुसार कुंभ के दिनों में यहां करोडों रुपये का व्यापार होगा। इसको लेकर हर छोटा-बड़ा व्यापारी उत्साहित है। श्रद्धालुओं के साथ किसी प्रकार की लूटपाट न हो, इसके लिए शासन ने कठोर दिशा-निर्देश जारी किए हैं।